मार्च–अप्रैल 2020

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

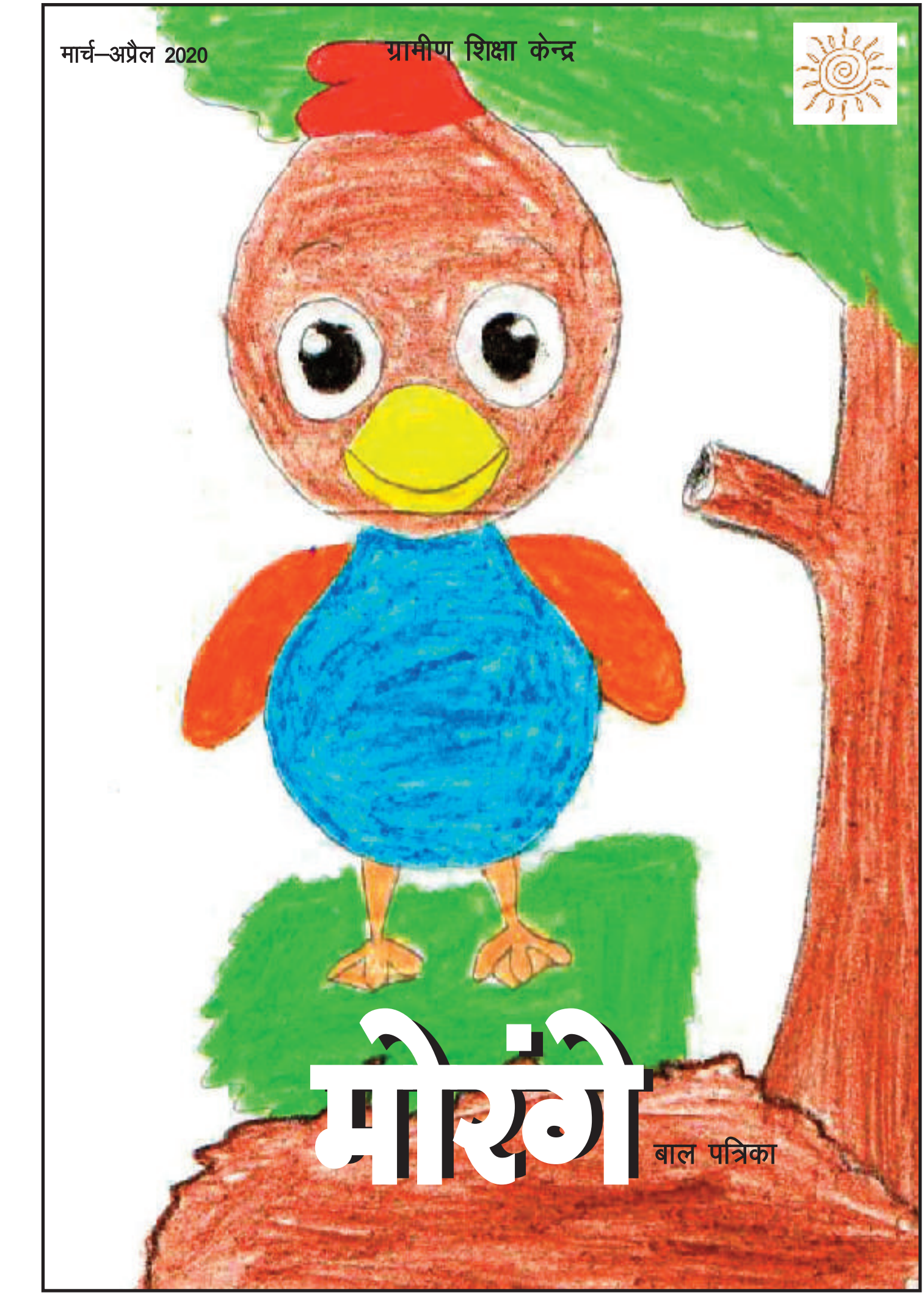

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 कोच और खिलाड़ी

उड़ान

8 प्रजा धनवान

9 मेरा पेड़–हमारा पेड़

10 जंगल के पेड़

जानवरों का बसेरा

11 मेरा गाँव

आती–जाती

12 मेरी बकरी

ज्ञान विज्ञान

13 किचिन गार्डन

14 विज्ञान प्रदर्शनी

जोड़–तोड़

15 परम मित्र

कलाकारी

16 दाल बाटी चूरमा

बात लै चीत ले

18 ऐसे तो कौन आता है

19 **माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी**

20 **कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ**

रिंकु मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण चित्र : दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा
वर्ष 11 अंक 117–118

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

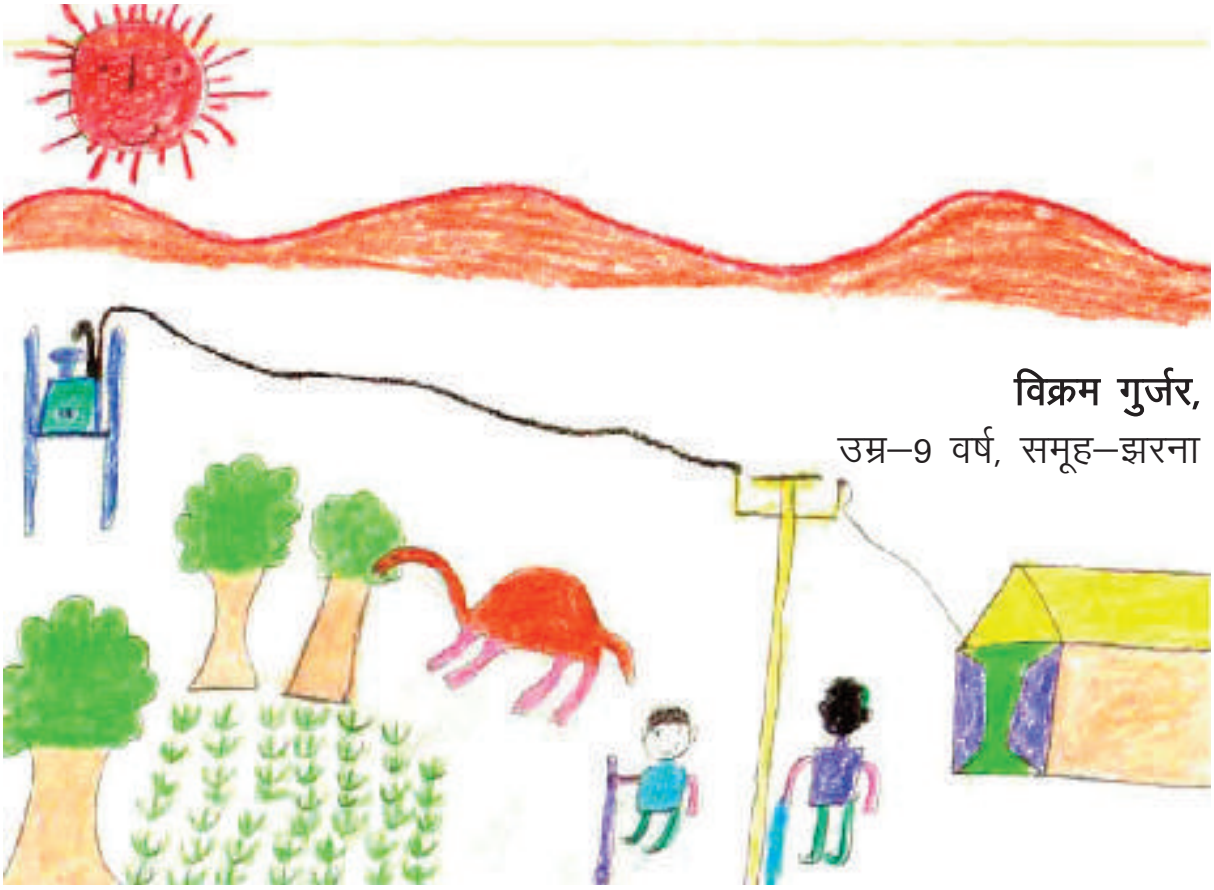

विक्रम गुर्जर,
उम्र–9 वर्ष, समूह–झरना

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

अंकित मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–सितारा

कोच और खिलाड़ी

कहते हैं हर बच्चे में कोई ना कोई प्रतिभा जरूर होती है। खिलाड़ी की प्रतिभा को पहचानने और तराशने का काम कोच का होता है। जब ये जोड़ी मिल जाती है तो सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती हैं। ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। इतिहास में अर्जुन और द्रोणाचार्य की सफल जोड़ी को हम सब जानते हैं। आज दुनिया सचिन तेन्दुलकर और रमाकांत आचरेकर को जानती हैं। सवाल ये है कि सचिन तेंदुलकर और रमाकांत अचरेकर में से महान कौन था? चेले ने गुरू को महान बनाया या गुरू ने चेले को? या फिर दानो ही महान थे? जब प्रतिभावान गुरू और प्रतिभावान शिष्य दोनों एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं तो फिर ये चमत्कार दुनिया के सामने आता है और तब दोनों एक दूसरे को सफलता की उचाइयों पर पहुँचाते हैं। ऐसी ना जाने कितनी ही प्रतिभाएँ सही जोड़ी नहीं बन पाने के कारण कामयाबी से वंचित रह जाती हैं।

ऐसी ही एक जोड़ी बनी बुधिया और बिरंचीदास की जो दुनियां के सामने ठीक से आ भी नहीं सकी की टूट गई और एक तारा खेल की दुनिया के आसमान में चमकने से पहले ही अपनी चमक खो बैठा। देश के सबसे गरीब और पिछडे राज्य उड़िसा के गरीब इलाके के गरीब परीवार में 2002 में बुधिया का जन्म हुआ। स्थिति यह थी की घरों में बर्तन माजने वाली गरीब मॉ के पास उसे पालने के लिए भी पैसे नहीं थे। ऐसे में जब वह मात्र ढाई वर्ष का था तब उसकी मॉ ने सिर्फ आठ सौ रूपये में एक व्यक्ति को बेच दिया। यहाँ से बुधिया भुवनेश्वर में जूड़ो के कोच बिरंचीदास तक किसी तरह पहुँचता है। कोच ने सोचा चलो इसे भी सिखाएंगे। लेकिन अभी वह ढाई वर्ष का बच्चा था। अब बच्चे तो शरारत करते ही हैं। एक दूसरे को तंग भी करते है। तो बच्चे उसकी शिकायत भी करते। एक दिन दूसरे बच्चों ने बुधिया की शिकायत की तो बिरंचीदास को गुस्सा आ गया। उन्होंने बुधिया

को सजा देने के लिए कहा, ''जाकर ग्राउण्ड में दौडो और जब तक मैं नहीं कहूंगा तुम दौड़ते रहोगे।'' यह कहकर बिरंचीदास अपने काम से कहीं चले गये। करीब पांच घंटे गुजर गये। पांच घंटे के बाद अचानक बिरंचीदास वापस आये। उनकी नजर ग्राउण्ड पर पड़ी तो देखा कि बुधिया अभी भी ग्राउण्ड में दौड रहा है। यह देखकर वे हैरान रह गये। कुछ बच्चे ग्राउण्ड में खडे थे। उनसे पूछा कि यह कब से दौड़ रहा है?

बच्चों ने कहा, ''सर जब से आपने कहा तब से दौड़ रहा है। करीब पांच घंटे हो गये यह बिना रूके दौड़ रहा है।'' बिरंचीदास को बड़ा अजीब लगा। इतना छोटा बच्चा पांच घंटे से बिना रूके दौड़ रहा है। एक सजा के तौर पर दिये गये काम

दिव्यांशु वैष्णव, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान

से बुधिया की काबिलियत और हुनर का पता चला। बिरंचीदास को बड़ा अफसोस भी हुआ। बड़ी ग्लानी भी हुई की एक बच्चे के साथ उन्होंने ऐसा किया। उन्होंने उसे बुलाया और बात की। उससे पूछा कि तुम्हे कुछ हुआ? बोला नहीं मैं अभी और भी दौड़ सकता हूँ। तब उन्हे लगा कि यह असाधारण बच्चा है, जो दौड़ सकता है।

इसके बाद बिरंचीदास ने उसकी काबिलियत को तराशने और सुधारने की को. शिश की और कहा, मैं इसको ट्रेनिंग दूंगा। यह बहुत अच्छा मैराथन रनर बन सकता है। इसके बाद बिरंचीदास और उनकी पत्नी ने एक तरह से बुधिया को गोद ही ले लिया। फिर ट्रेनिंग देना आरंभ किया। सब कुछ ठीक चलता रहा। जब बुधिया को काफी ट्रेनिंग देने के बाद बिरंचीदास ने उसे इस लायक बना दिया कि वह दुनिया के सामने आकर धमाका कर सके। पहली बार 2006–2007 में बुधिया को

पूरे देश और दुनिया के सामने लाने के लिए पूरी जो उड़ीसा में एक जगह है वहाँ के जगन्नाथ मंदिर से लेकर उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर तक एक मैराथन दौड का आयोजन बुधिया के लिए किया गया। बुधिया ने तड़के 4 बजे मंदिर के सिंह द्वार से अपनी दौड शुरू की, तो बड़ी संख्या में लोग वहाँ मौजूद थे। लोगों ने बुधिया का उत्साह बढ़ाया और उसके समर्थन में नारे भी लगाये। दौड़ को सी.आर.पी.एफ. प्रायोजित कर रही थी। मीड़िया वगैरह भी वहाँ बड़ी संख्या में पहुँचा। बुधिया का हौसला बढाने के लिए सी.आर.पी.एफ. के 200 जवान भी उसके साथ दौडे। 65 किलो मीटर की दूरी बुधिया 7 घंटे 2 मिनट में बिना रूके पूरी करते हुए भूवनेश्वर पहुँच गया। लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड के लोग भी वहां मौजूद थे। उस दिन लिम्का बुक में बुधिया का नाम सबसे कम उम्र के बच्चे के रूप में दर्ज हुआ। बुधिया ने बि. रंचीदास के सानिध्य में तहलका मचा दिया था। दोनों सुर्खियों में आ चुके थे। अगले दिन देश दुनिया के अखबार और टी.वी. चैनलों में बुधिया की खबरे छपी। लोग गुरू और चेले की बाते करने लगे और बुधिया को भविष्य के एक ऐसे धावक के रूप में देखने लगे। जो दौड़ के सारे रिकॉर्ड तौडेगा। इसी के साथ बुधिया की गरीबी की कहानी भी अखबारों में छपने लगी। तो देश विदेश से बुधिया की मदद के लिए पैसा भी बहुत आया।

महज साढ़े चार साल की उम्र में बनाये बुधिया का रिकार्ड आज भी कायम है। अभी और भी रिकार्ड टूटने थे पर अचानक एक दिन बुधिया के कोच बिरंचीदास की मृत्यु की खबर आती है। गुरू–शिष्य की जोड़ी टूट चुकी थी। कोच की मृत्यु ने बुधिया को एक बार फिर से अनाथ कर दिया।

विष्णु गोपाल

अजय नायक,
उम्र–11 वर्ष, समूह–हरियाली

प्रजा धनवान

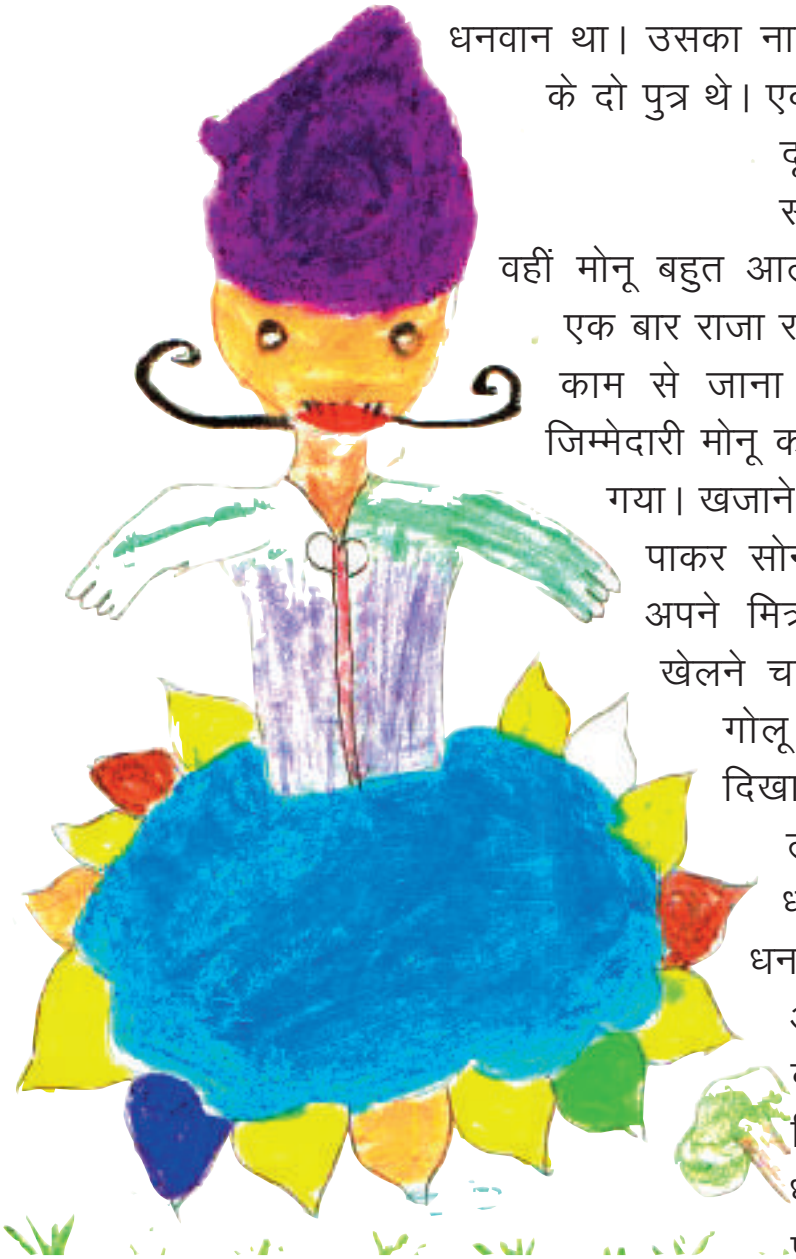

आरती मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–सितारा

एक बार की बात है। एक राजा था। वह बहुत धनवान था। उसका नाम रामसिंह था। रामसिंह के दो पुत्र थे। एक का नाम सोनू था तथा दूसरे का नाम मोनू था। सोनू बहुत मेहनती था वहीं मोनू बहुत आलसी और कामचोर था। एक बार राजा रामसिंह को कहीं पर कुछ काम से जाना पड़ा। वह खजाने की जिम्मेदारी मोनू को सौंप कर वहाँ से चला गया। खजाने की चाबी और जिम्मेदारी पाकर सोनू बहुत खुश था। सोनू अपने मित्र गोलू के साथ बाहर खेलने चला गया। खेलत–खेलते गोलू को वहाँ एक चाबी दिखाई दी। उसने चाबी को लेकर देखा तो वह चाबी धन के कमरे की थी। वह धन के कमरे के पास गया और उसने चाबी से उस कमरे का ताला खोल लिया। उसमें बहुत सारा धन था। गोलू के पीछे–पीछे मोनू भी वहाँ आ गया। मोनू धन को देखकर बहुत खुश हुआ। मोनू ने सोचा हमारे पास इतना धन है तो क्यों न इसको प्रजा में बांट दिया जाये। उसने सैनिकों से कहा जाओ सारी प्रजा को बुला लाओ। मोनू ने सारा धन प्रजा में बांट दिया। जब उसका पिता आया तो उसे सारी प्रजा धनवान दिखाई दी। राजा रामसिंह को पछतावा हुआ कि उसने यह जिम्मेदारी यदि सोनू बेटे को दी होती तो यह दिन नहीं देखना पड़ता।

जितेन्द्र मीना, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

मेरा पेड़-हमारा पेड़

एक बार मैने एक पौधा लगाया। वह नीम का पौधा था। उस पौधे को लगाने के लिए पहले मैंने एक गड्डा खोदा फिर उस गड्डे में पौधा रखा तब मैंने उसमें खाद डाला। इतना करने के बाद पानी डाला। अब उस पौधे को रोजाना सही रखते और उसकी देखभाल करते। समय–समय पर उसमें पानी भी डालते। कुछ ही दिन में पौधा 1 इंच बड़ा हो गया और फिर 3 इंच बड़ा हो गया। दिसंबर में हमारी शीतकालीन की छुट्टी आ गई तो हम घर पर जाने लगे। हम उसमें पानी डाल कर घर चले गये। जब शीतकालीन की छुट्टी पूरी हो गई फिर हम स्कूल में आये तो हमने देखा कि पौधा बड़ा हो गया है। किसी ने भी उसे नुकसान नहीं पहुँचाया था। मै सोचने लगा कि मेरी मेहनत सफल रही।

दुर्गेश यादव, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय डांगरवाड़ा

एक दिन मैने देखा कि जो पेड़ लगाया था वो किसी ने काट दिया। इसका मुझे बहुत दुःख हुआ। फिर मैने मेरे साथियों के साथ दूसरा पेड़ लगाया और उसमें भी हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी। धीरे–धीरे बहुत दिन बीत गये तो हमने देखा वह पेड़ बड़ा हो हो रहा है। हम बहुत खुश हुए। हम उस पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ने लगे। जब हम घर जाते थे तो बाबा से कह जाते थे कि कोई इस पौधे को काटे नहीं।

सोनू प्रजापत, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

जंगल के पेड़

एक बार की बात है। मैं अपने मामा जी के घर जा रही थी तो मैंने देखा एक आदमी लकड़ी काट रहा था। वह जंगल का इलाका था। उसने चार कीकर के पेड़ काट दिये थे। फिर मैं उसके पास गई और मैंने उसे मना किया। पर उसने मेरी बात नहीं मानी और कहा, ''तुम अभी छोटी बच्ची हो और भले–बुरे के बारे में नहीं जानती। इसलिए तुम यहाँ से चली जाओ और मुझे अपना काम करने दो।''

मैं वहाँ से जाने ही वाली थी कि एक शेर उस आदमी की तरफ आया और बोला, ''मैं तुम्हें खाना चाहता हूँ।''

आदमी बोला, ''वो लड़की भी तो हैं, तुम उसे क्यों नहीं खाते।''

शेर बोला, ''जंगल में तो तुम घुसे हो ऊपर से पेड़ भी काट रहे हो। वो जंगल नष्ट नहीं कर रही है। बल्कि तू मेरे जंगल को नुकसान पहुँचा रहा है।''

आदमी बोला, ''मुझे मत खाओ। अब मैं कभी पेड़ नहीं काटूंगा, बल्कि उगाऊंगा।'' शेर ने उसे जाने दिया।

वह आदमी अब पेड़ नहीं काटता है।

काजल बैरवा, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

जानवरों का बसेरा

एक जंगल था। उस जंगल के पास एक गाँव था। उस गाँव में एक महल था। महल में एक राजा रहता था। उस राजा को जानवर बहुत पसंद थे। जंगल में एक शेर भी रहता था। पर जंगल में कोई जानवर नहीं था। इसलिए वह बहुत उदास रहता था। शेर शिकार के लिए निकलता तो उसको कोई भी नहीं मिलता। वह बहुत कमजोर हो गया और पतला दूबला भी हो गया था। जब राजा को पता चला तो राजा ने कहा कि उस शेर को यहाँ ले आओ। राजा के सिपाई उसको पकड़ने गये तो उनको मरा हुआ शेर दिखाई दिया। सिपाई राजा के पास वापस आये और शेर के मरने की सूचना दी। राजा को बहुत दुःख हुआ। फिर राजा किसी जंगल से शेर और हाथी और बहुत सारे जानवर लाया और उस जंगल में लाकर छोड़ दिये। अब उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते हैं और एक दूसरे के सहारे जीते हैं। इससे जंगल भी हरा–भरा हो गया। राजा यह सब देखकर बहुत खुश हुआ।

सोनू बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

मेरा गाँव

ऊँची ऊँची पहाड़ी वाला।
हरे भरे खलियानों वाला।
मीठे जल के झरनों वाला।
मेरा गाँव मतवाला।
चिड़िया, कोयल सुबह जगाती।
भौंरे गुन गुन करते जाते।
फूलों के वो चक्कर खाते।
मेरे मन को बहुत लुभाते।
किसान सुबह खेतो में जाते।
फसलों में जब खाद लगाते।
छाछ–राबड़ी संग कलेवा करते।
खुश रहते और मेहनत करते।
सादा जीवन सादा वेश।
मेरा गाँव है अति विशेष।

कोमल वैष्णव, कक्षा–8,
रा.उ.प्रा.वि. कुतलपुरा मालियान

रविना सैनी, कक्षा–6,
राजकीय विद्यालय रामसिंहपुरा

प्रिया मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

आती–जाती

रंग बिरंगी आती तितली
फूल फूल पर जाती तितली
रस चूस कर जाती तितली
बच्चों का मन बहलाती तितली
रंग बिरंगी आती तितली
कभी हंसाती कभी रूलाती
सबका जी ललचाती तितली
आती जाती सारी तितली
रंग बिरंगी आती तितली
फूल–फूल पर जाती तितली।

सूरज सैनी,
उम्र–13 वर्ष, समूह–उजाला

किशन, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

मेरी बकरी

मेरी बकरी बड़ी निराली
दिल की साफ रंग की काली
कभी नहीं यह सींग मारती
यह कितनी भोली–भाली
मेरी बकरी बड़ी निराली
दिन भर उछल कूद मचाती
और मजे से चारा खाती
ताजा–ताजा दूध पिलाती
करती सेहत की रखवाली
मेरी बकरी बड़ी निराली।

नन्दिनी, उम्र–12 वर्ष,
रा.उ.प्रा.वि. कुतलपुरा मालियान

किचिन गार्डन

रोहित कुमार माली, कक्षा–8, राज. विद्यालय डांगरवाड़ा

हमारे स्कूल उदय साम. दायिक पाठशाला कटार में थोड़ी–थोड़ी जगह कमरों के बींच खाली थी। उसमें हमारे तरूण गुरूजी ने किचिन गार्डन लगाने की सोची। तरूण गुरूजी ने बच्चों से कहा कि तुम्हारे खेतों में से टमाटर, मिर्ची, बैंगन आदि की पौध ले आना। बच्चों ने उनकी बात मान ली। सभी बच्चों ने कहा कि जिसके पास जो भी पौध, बीज होगा वह ले आयेगा। बच्चे खाद, गोबर आदि भी ले आये और गुरूजी व बच्चों ने मिलकर खाद डाला, पानी डाला, मिट्टी तैयार की और उसके बाद उसमें टमाटर, मिर्ची, बैंगन आदि की पौध लगा दी। समय–समय पर उसमें पानी देते रहे। दो–तीन माह बाद उनमें फूल आने लगे तो बच्चे बहुत खुश हो गये। एक महिने बाद टमाटर, मिर्ची, बैंगन आदि आने लगे। बच्चे उन्हें कुकिंग क्लब में काम लेने लगे। इसी तरह हर साल किचिन गार्डन में खेती की जाती है।

जितेन्द्र मीना, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

विज्ञान प्रदर्शनी

मुझे बच्चों की एक विज्ञान प्रदर्शनी राजकीय विद्यालय में करनी थी। जिसमें बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तक के प्रयोग व मॉडल स्वयं से तैयार करके विजिटर्स के सामने प्रदर्शन करेंगे। मैने कक्षा अध्यापक और प्रधानाचार्य से बात की तो उन्होंने कहा, ''इतने कम समय में ये कैसे होगा? बच्चे नहीं कर पायेंगे। इससे पहले उन्होने किया

कुलदीप सैनी,
उम्र–7 वर्ष,
समूह–झिलमिल

भी नहीं। बी.ई.ई.ओ., पी.ई.ओ. और जी.एस.के. स्टाफ के लोगों के सामने तो ये बोल भी नहीं पायेंगे।''

सब की बात सुनकर मैं भी सोच में पड गया। कुछ समय बाद मेरे दिमाग में तारे जमीन पर फिल्म का ईशान घूमने लगा। उस फिल्म से मुझे प्रेरणा मिली और मैने सब को आश्वासन दिया कि चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। आप तो बच्चों के मॉडल/प्रयोग तैयार करवाओ। हालांकी मेरे मन में भी थोड़ा डर था। लेकिन हमने फिर डर कि चिन्ता किये बिना बच्चों के साथ काम किया। प्रदर्शनी के एक दिन पहले तक भी मुझे विश्वास नहीं था कि बच्चे अच्छा प्रदर्शन कर पायेंगे।

प्रदर्शनी का वो दिन भी आ गया। सभी विजिटर्स द्वारा अवलोकन किया गया। जिसमें समुदाय से लगभग 50–60 महिला व पुरूष, अन्य कक्षाओं के बच्चे, जी.एस. के. से विष्णु जी व तीर्था जी, उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य शामिल थे। सभी ने बच्चों से तरह–तरह के सवाल पूछे तो जो बच्चे किताब पढ़ना नहीं जानते थे वे भी प्रयोगों को अच्छे से समझा रहे थे। यह देखकर स्कूल के स्टाफ और मेरे चेहरे पर खुशी की लहर दौड पड़ी। सभी इस बात से चकित थे।

अन्त में आगन्तुकों ने प्रदर्शनी की तारीफ की और कहा, ये अच्छी पहल है। बच्चे स्वयं से करके जल्दी और स्थाई रूप से सीखते हैं। दूसरों को करके दिखाने और बताने से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

शिक्षक – भोला शंकर

परममित्र

मनीषा सैनी,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

मैं 5वीं कक्षा में पढ़ता हूँ। पहले मुझे वैदिक गणित में परममित्र के बारे में पता नहीं था। फिर एक बार गुरूजी ने मुझे परममित्र के बारे में समझाया लेकिन मुझे समझ में नहीं आया। गुरूजी ने पूछा, किसे समझ में नहीं आया? तो मैंने कहा, मुझे नहीं आया। गुरूजी ने हमें फिर समझाया। लेकिन फिर भी मेरे समझ नहीं आया। गुरूजी ने हमें बोर्ड पर कुछ सवाल दिये लेकिन वो भी मेरे समझ नहीं आये। मैंने मेरे पड़ौस में रहने वाले रामवीर नाम के लड़के से पूछा तो उसने मुझे अच्छी तरह समझाया। उस दिन तो मेरे अच्छी तरह समझ में आ गये लेकिन दूसरे दिन वापस भूल गया। फिर मैंने छुट्टी में मेरे पड़ौस में रहने वाली एक लड़की से पूछा। उसने मेरी मदद नहीं की और ना कह दिया। जब मैं स्कूल आया तो बच्चे मुझे चिढ़ाने लगे। ये बात मुझे अच्छी नहीं लगी और मैंने ठान लिया कि मुझे सीखना ही है। फिर मैंने घर जाकर खूब मेहनत की ओर मैं परममित्र सीख गया। अगले दिन जब मैं स्कूल गया तो मैने सबके सामने सवाल हल कर दिये। तब कोई नहीं हँसा था। मुझे बड़ा अच्छा लग रहा था। क्योंकि इस बार मुझे सब याद था और मैं भूला नहीं था।

भगवान सिंह गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, समूह–झरना

कलाकारी

दाल बाटी चूरमा

उदय सामुदायिक पाठशालाओं में कुकिंग क्लब के माध्यम से कुछ ना कुछ बनता रहता है। बस ऐसी एक घटना पर उदय पाठशाला के बच्चों द्वारा अपने–अपने अनुभव साझा किये हैं। जो इस प्रकार है–

दिनांक 18 नवम्बर, 2019 को स्कूल में बच्चों और सभी गुरूजी ने मिलकर दाल, बाटी, चूरमा बनाया था। लेकिन मैं उसमें शामिल नहीं हो सका। इसका कारण मेरी मम्मी थी। मेरी मम्मी कह रही थी कि, ''आज मैं तुझे साईकिल दिलाने चलूंगी, तो आज पढ़ने मत जाना।'' मैंने भी साईकिल की बात सुनकर हाँ कह दी। ठीक है ''आज मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।'' मेरी मम्मी घर के काम खत्म करने लग गई और मैं बकरी चराने चला गया। बहुत देर हो गई तो मेरी मम्मी मुझे ढूंढने आई। पर जब मैं उसे नहीं मिला तो मेरी मम्मी वापस चली गई और वह मुझे साईकिल दिलाने नहीं जा सकी। जब मैं शाम को बकरी चराकर आया तो मेरी मम्मी घर पर नहीं थी। पूछने पर पता चला वह बकरी के बच्चे के लिए पाला काटने गई है। जब तक मम्मी वापस आई काफी देर हो गई थी। वह मुझे देखते ही बोली ''तुझे तो मैं ढूंढने के लिए आई थी लेकिन तुम नहीं मिले। आज तुम्हारी पढ़ाई भी खराब हो गई और साईकिल भी नहीं लाये। अब कभी भी घर पर मत रूकना। रोजाना स्कूल जाना। मैं तुझे रविवार के दिन दिला दूंगी।'' मैंने कहा, ''ठीक है, अब मैं कभी नहीं रूकूंगा और रोज पढ़ने जाऊंगा।'' मैने मम्मी से कोई शिकायत नहीं की। क्योंकि हम दोनों ही एक दूसरे को ढूंढते रहे और नहीं मिलने पर अपने–अपने काम करते रहे। इसी चक्कर में मैं दाल बाटी चूरमा भी नहीं देख पाया और उसमें आमंत्रित होते हुए भी शामिल नहीं हो सका। यह ऐसा सोमवार था जिस दिन मैं ना तो पढाई कर सका, ना दाल बाटी चूरमा में शामिल हो सका और ना ही साईकिल ले सका।

गोविन्द नायक, समूह–सूरज, उम्र–11 वर्ष

लक्ष्मी, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय रांवरा

हमारे स्कूल में हमने एक दिन दाल, बाटी, चूरमा बनाने की सोची। हमारे गुरूजी ने कहा कि तुम दाल, चून और मिर्ची, नमक आदि सामग्री अपने घरों से लाना। हमने कहा ठीक है। गुरूजी ने कहा कि कंडे भी लाने हैं। मैं घर गया और अपने मम्मी पापा से बात की। मेरे मम्मी पापा बोले, ''नहीं, तुम लड्डू बाटी नहीं खा सकती हो। तुम्हारी दवाई चल रही है।'' सुनकर बहुत बुरा लगा पर मैंने कहा, ''ठीक है पापा।'' फिर कल सुबह में स्कूल आई तो मैंने भैया से कहा, ''भैया मेरे मम्मी–पापा नहीं माने, मेरी दवाई चल रही है। इसलिए मैं दाल बाटी चूरमा नहीं खा सकती।'' इस तरह मैं उन सब को देखती रही।

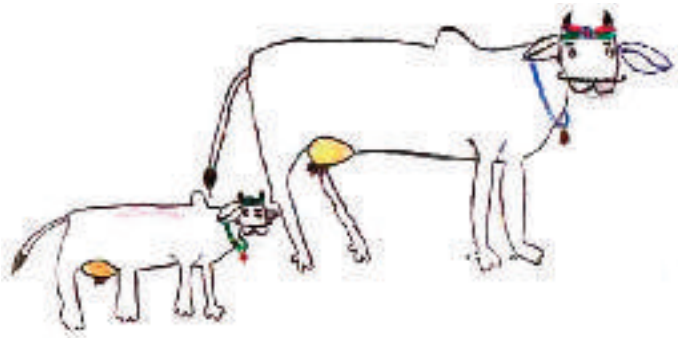

पायल चौधरी, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय सांवलपुर

रवीना शर्मा, समूह–लहर, उम्र–9 वर्ष

कल यानी की दिनांक 18.11.2019 को हमारे स्कूल में दाल, बाटी और चूरमा बनाया गया। सारे स्कूल ने दाल, बाटी, चूरमा बनाने में बहुत मदद की। सारे बच्चे अपने–अपने घर से सामग्री लाये। जैसे आटा, मिर्ची, प्याज, नमक आदि और फिर हमने मिलकर दाल, बाटी, चूरमा बनाया। मुझे उस वक्त बहुत खुशी हो रही थी। उस वक्त सारे स्कूल के बच्चे और अध्यापक वहाँ मौजूद थे और सब मदद करवा रहे थे। कुछ स्कूलों में तो जब कुछ विशेष हो तभी यह सब किया जाता है। लेकिन हमारे स्कूल में ऐसा कुछ भी नहीं होता। क्योंकि हमारा स्कूल ही सब स्कूलों से अलग है। जब भी बच्चों और अध्यापकों का मन कुछ विशेष करने का होता है या कुछ बनाने का मन होता है तो हम दूसरे दिन ही काम कर लेते हैं। हम यह कार्य बाल दिवस पर करने वाले थे। लेकिन उस दिन हमने इस बारे में कुछ सोचा ही नहीं था। फिर हमने यह काम शनिवार को करने की सोची लेकिन शनिवार को हमारे पास ज्यादा सामग्री नहीं थी। फिर उस दिन भी दाल, बाटी, चूरमा नहीं बना और अगले दिन फिर रविवार आ गया। सब छुट्टी पर थे तो दूसरे दिन सोमवार को हमने दाल, बाटी, चूरमा बनाया। हमें उसको बनाने में समय लगा। हमारी पढ़ाई भी खराब हुई। लेकिन दाल, बाटी, चूरमा हमने ऐसा बनाया कि मैं तो अंगुलियाँ चाटती रह गई। हमारा जो चूरमा बना था उसमें घी, दाख, काजू सभी डाले थे। उसे देखकर ही मुँह में पानी आ रहा था। क्योंकि हमारा चूरमा बना ही कुछ ऐसा था। मैंने आज तक ऐसा चूरमा नहीं खाया। अगर आप होते तो कहते कि वाह, क्या चूरमा है।

आरती बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

ऐसे तो कौन आता है

चेतराम गुर्जर,
कक्षा–9, समूह–झरना

हमने दीपावली के दो दिन पहले हमारे घर की साफ–सफाई की। हमने कुछ भी नहीं खरीदा था। क्योंकि मम्मी के पास पैसे नहीं थे। हम मेरे पापा के आने का इंतजार कर रहे थे। दीपावली के दिन मेरे पापा सुबह लगभग 2 बजे घर आ गये थे और फिर दिन में हम खरीददारी करने के लिए बहरावण्डा खुर्द कस्बे के लिए निकल गये। हमें बहुत सारा सामान लेना था। जैसे मेरे लिए कपड़े और घर का सामान आदि। उस दिन बाजार में बहुत भीड़ थी। इसलिए पहले हमने घर का सारा सामान खरीदा। रही मेरे कपड़ों की बात। मैं सारी दुकानों पर घूम गई लेकिन मुझे कपड़े पसंद नहीं आये। फिर मेरी भाभी मुझे मिली। वह भी बाजार आई थी। मेरे पापा ने कहा हम सब सब्जी मण्डी जाते हैं और तुम दोनों दूसरी दूकानों पर जाकर कपड़े देख लो। हम एक दुकान पर गए। वहाँ जाकर मुझे कपड़े पसंद आये। उस दिन हमारे चार हजार रूपये खर्च हुए। शाम को हमने लक्ष्मी पूजन किया और सारी गाड़ियाँ पूजी। उस वक्त मैं बहुत खुश भी थी क्योंकि हमारा सारा परिवार एक जगह था। ऐसे तो कौन आता है? लेकिन उस वक्त सारे सदस्य एक जगह थे। कोई पटाखे चला रहा था, तो कोई मिठाई बाँट रहा था, तो कोई गाड़ी की पूजा कर रहा था।

आरती बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

माथापच्ची

1. छोटा सा फकीर उसके पेट में लकीर।
2. हमने देखा ऐसा वीर जो गाना गाकर मारे तीर।
3. ऐसी कौनसी बुक है जो अब तक छपी नहीं।
4. ऐसी कौनसी नदी है जिसमें हीरे पाये जाते हैं।
5. ऐसी कौनसी मछली/जीव है जिसका खून नीला होता है।

बलराम, जयसिंह, समूह– हरियाली,
अजय नायक, समूह–सूरज

नंदिनी वर्मा, कक्षा–6,
राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान

हीहीही ठीठीठी

1. अध्यापक (बच्चों से) – अगर रात में मच्छर काटे तो क्या करना चाहिए?
   पप्पू – चुपचाप खुजा कर सो जाना चाहिए। क्योंकि आप कोई रजनीकांत तो हो नहीं कि मच्छर से सॉरी बुलवा लोगे।
2. अध्यापक – घर की परिभाषा बताओ।
   पप्पू – जो घर हौंसले से बनाये जाते हैं उन्हें 'हाऊस' कहते हैं।
   जिन घरों में होम–हवन होते हैं उन्हें 'होम' कहते हैं।
   जिन घरों में हवा ज्यादा चलती हैं उन्हें 'हवेली' कहते हैं।
   जिन घरों में दिवारों के भी कान होते हैं उन्हें, 'मकान' कहते हैं।
   जिन घरों के लोन की इन्स्टॉलमेंट भरते–भरते आदमी लेट जाता है उन्हें 'फ्लेट' कहते हैं।
   जिन घरों में यह भी न पता हो कि बगल के घर में कौन रहता है उन्हें 'बंगला' कहते हैं।

इन्टरनेट से साभार।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

आसमान में बहुत तेज घटा छा रही थी। हमारी स्कूल में दिन में ही अंधेरा हो गया। हमारे गुरूजी को चिन्ता होने लगी कि बच्चे घर कैसे जायेंगे। तभी जोर से बिजली के चमकने के साथ बारिश शरू हो गई। चारों तरफ पानी ही पानी ...

पवन बैरवा, *उम्र–11 वर्ष, समूह–खुशबू द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।*

रोहित सेन,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–सूरज

मेरी गुडिया करे मन मानी।
पहने साड़ी बने सयानी।...

अंजली मीना, *उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।*

सितंबर–अक्टूबर माह में दी गई अधूरी कहानी कविता को शिक्षिका सपना रा. जावत ने पूरा करके भेजा है –

आसमान से बरसे आग।
धरती से उड़ती है खाक।

हरिओम सैनी,
कक्षा–6,
राजकीय प्रा. विद्यालय
रामसिंहपुरा

हवा धूल भरकर लाती है।
पता नहीं ये गरमी क्यूँ आती है।
सर से लेकर पैर तक।
पसीने से नहलाती है।
पता नहीं ये गरमी क्यूं आती है।
आसमान से बरसे आग।
धरती से उड़ती है खाक।
पीलू, धोक, झाड़ बस यही दिखता।
देखो तो रेगिस्तान कितना विरान लगता।
सब बड़े निहार रहे हैं।
आसमान को ताक रहे हैं।
कब बरसेगा ठण्डा पानी।
कब धरती ओढेगी चुन्नर धानी।

योगिता गुर्जर, उम्र–5 वर्ष, समूह–झरना

सपना राजावत, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

एक बार कुछ लड़के जंगल में बकरियों को लेकर चराने गये। वे सब जंगल में बहुत आगे तक निकल गये। तभी उन्होंने अचानक शेर की दहाड़ सूनी तो वे सब डर गये। दहाड़ की आवाज सुनकर बकरियाँ इधर–उधर भागने लगी ... लड़के भी बहुत डर गये। उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करें। खुद को बचाये या बकरियों को। तभी एक लड़का जिसका नाम रामू था बोला कि चलो तेजी से भाग चलते हैं। शेर हमारे आस–पास ही है। दूसरा बोला अरे नहीं, नहीं। शेर ने हमें देख

शीतल बैरवा,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–लहर

लिया तो वह हमें खा जायेगा और हम उससे तेज भी तो नहीं दौड़ सकते। क्यों न हम पेड़ पर चढ़ें और छिपकर बैठ जायें। शेर के जाने के बाद नीचे उतर आयेंगे। गोपाल बोला ऐसे हम तो बच जायेंगे लेकिन हमारी बकरियों का क्या होगा? शेर तो सारी बकरियों को खा जायेगा। वे लोग आपस में बात कर ही रहे थे कि उन्हें एक और दहाड़ सुनाई दी। रामू, श्यामू तो डर के मारे कांपने लगे और कहने लगे शेर हमारी ओर ही आ रहा है। परन्तु गोपाल ने हिम्मत बांधी और जल्दी से बहुत सारी लकड़ी व पत्ते एकत्रित करके आग जलाई। उसने आग जलाने के लिए 2 पत्थर लेकर उनको आपस में जोर–जोर से रगड़ा तो चिंगारी से आग जल गई। आग देखकर शेर डर कर पीछे मुड़ गया। गोपाल भी जलती हुई लकड़ी लेकर दूर तक शेर के पीछे भागा। अब शेर दूर जा चुका था। अब सभी सुरक्षित थे। लड़के भी और उनकी बकरियाँ भी।

सपना मीना, कक्षा–6, राज. उ. प्रा. विद्यालय जमूलखेड़ा

पहेलियों के ज़वाब –

1. गेहूं 2. मच्छर 3. फेसबुक 4. कृष्णा नदी 5. आक्टोपस

रीतु बैरवा, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय हलौन्दा